पाठ 17

अमरकंटक से डिंडौरी

(प्रस्तुत यात्रा वृतांत में नर्मदा नदी के सौंदर्य के साथ-साथ उसके तट के जनजीवन की अंतरंग झलक भी मिलती है ।)

गंगोत्री, यमुनोत्री या फिर नर्मदा कुंड - ये वे स्थान है, जहां नदी पहाड़ की कोख से निकलकर पहाड़ की गोद में आती है । पहाड़ के गर्भ में छुपा हुआ पानी यहाँ अवतरित होता है । नवजात शिशु की तरह नदी यहां धवल उज्जवल और कोमल होती है ।

यहां से हमारी यात्रा का नया अध्याय शुरू हुआ | अभी तक हम नर्मदा के उत्तर - तट पर थे, यहां से दक्षिण - तट पर आ गए | अभी तक उद्गम की ओर चलते थे, आज से संगम की ओर चलेंगे।

कोई 2 घंटे में कपिलधारा पहुंच गए | अधिकांश परकम्मावासी यहां से सड़क पकड़कर कबीरचौरा होते हुए डिंडौरी निकल जाते हैं लेकिन हमें तो नर्मदा के किनारे किनारे ही जाना था, पर कपिलधारा के सामने की गहरी घाटी को देखकर ठिठक कर खड़े हो गए ।

वहां से कोई नहीं जाता | वहां पगडंडी तो क्या पगडंडी की चुटिया तक नहीं थी । बहुत चिरौरी करने पर भी कोई हमारे साथ आने को तैयार ना हुआ | उल्टे डरा दिया कि गर्मी के

दिन है, सांप - बिच्छू नदी के किनारे आ जाते हैं, वहां से जाना खतरे से खाली नहीं | लेकिन जाएंगे तो नर्मदा के संग - संग, इसी घाटी में से, चाहे जो हो।
रक्षा करना मां ऐन कपिलधारा से नीचे उतरना संभव नहीं था | थोड़ा आगे बढ़ कर नीचे उतरे।
प्रपात के आसपास मधुमक्खी के सैकड़ों छत्तों को देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ। दीपावली के समय एक भी छत्ता नहीं था। मधुमक्खियों को गरमी में शायद यहाँ की ठंडक भाती हो।

दूधधारा से भी नीचे उतरे। चट्टानों पर से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। कहीं-कहीं तो समझ में नहीं आता था कि कहाँ से बढ़ें। गिरते-पड़ते, चढ़ते-उतरते, चप्पा-चप्पा आगे बढ़ रहे थे। थक जाते तो बैठ लेते, फिर तुरंत चल देते। इस सुनसान घाटी में हम अनावश्यक विलंब करना नहीं चाहते थे।

विलंब नर्मदा भी नहीं चाहती थी। तेज गति से कूदती-दौड़ती नीचे उतर रही थी। अमरकंटक कोई बड़ा पहाड़ नहीं। आते समय हम इसे दो घंटे मे चढ़ गये थे। उस समय नर्मदा का साथ छोड़ दिया था, सीधे पगडंडी से चढ़े थे। इस बार नर्मदा के किनारे-किनारे, बिना पगडंडी के उतर रहे थे।

नर्मदा की उँगली पकड़कर चल रहे थे। आमने-सामने ऊँचे हरे-भरे पहाड़ और बीच में गहरी और सँकरी घाटी में से बहती हुई तन्वंगी नर्मदा। तीसरे पहर घाटी चैड़ी होने लगी। मैं समझ गया कि पहाड़ खत्म होने को है, मैदान आ गया। हमारी खुशी का क्या कहना।

अमरकंटक का नाम मेकल भी है। इसलिए नर्मदा का नाम मेकलसुता भी है। मेकल अपनी बिटिया को वनाच्छादित घाटी में से किस हिफाजत से नीचे छोड़ गया है, इसे आज हमने अपनी आँखों से देखा।

आगे जाने पर पगडंडी मिल गयी। इक्के-दुक्के ग्रामीण भी दिखाई देने लगे। शाम होते-होते पकरीसोंढा पहुँचे। खूब सबेरे आगे बढ़े। सामने के सूखे खेतों में से बहती नर्मदा साफ

दिखाई दे रही थी। अभी तक तंग घाटी के घने शाल वन में नर्मदा छुपी थी, मुश्किल से ही नजर आती थी, लेकिन यहाँ से वह दूर से भी साफ-साफ दिखाई देती है। नर्मदा का जन्म मानों गौरैया की तरह हुआ है। ऊपर कुंड के घोंसले में अंडे की तरह अवतरित हुई है। अंडे में से बाहर वह यहाँ नीचे निकली है।

आगे एक पेड़ की छाया में भोजन बनाने बैठे। पास में किरंगी गाँव है। वहाँ का एक ग्रामीण नहाने आया था। हमारे बारे में जानकर बहुत खुश हुआ। कहने लगा, 'गुरु जी, हमारे गाँव में अखंड कीर्तन हो रहा है, जरूर आइए, मेरे घर पर ही ठहरिए।'

उसके घर पहुँचे। पड़ोस में अखंड कीर्तन चल रहा था। दूसरे दिन आम का विवाह था, तो वहाँ दो दिन रह गये। उसके पड़ोसी ने घर के आँगन में आम का पेड़ लगाया था। दो साल से उसमें आम लग रहे थे। लेकिन जब तक वह उस पेड़ का विवाह नहीं कर देता, तब तक उसके फल नहीं खा सकता। ऐसा रिवाज है यहाँ। सो चमेली की बेल के साथ आम का विवाह रचाया है।

पंडित जी आये हैं, विधिवत विवाह हो रहा है। हम यह सब रसपूर्वक देखते रहे ! गाँव के कठोर जीवन में ऐसे अनुष्ठान रस घोलते हैं।

गारकामट्टा में गोपी कोटवार के घर रहे। गाँव में एक जगह शादी हो रही थी। हम भी शामिल हुए। भाँवरें पड़ रही थीं। सभी ने दूल्हा-दुलहन के पैर पूजे। मैंने भी पूजे। दुलहन के हाथ मंे दो रुपये रखे तो तहलका मच गया। सभी दस्सी-दस्सी जो दे रहे थे !

एक मजे की बात यह थी कि यह लड़की का नहीं, लड़के का घर था।

यहाँ चार भाँवरे लड़की के घर पड़ती हैं, तीन लड़के के घर। यहाँ से चलने पर नर्मदा का एक प्रपात देखने को मिला। नर्मदा के बीसियों प्रपातों में सबसे लहुरा- कोई एक मीटर ऊँचा। पानी ने पथरीले पाट को काट-छाँट कर खोखला बना दिया है, मानो नदी में कोठियाँ बनी हों। इसलिए इसका नाम है कोठीघुघरा। घुघर या घुघरा यानी प्रपात।

श्रीहीन धरती पर से आगे बढ़ रहे थे। दीवाली के समय जब सामने तट से चले थे, तब कैसी हरियाली थी ! उसकी जगह अब है सूरज की ज्वाला से चटखी हुई भूरी, सूखी जमीन। छाया के लिए कहीं पेड़ तक नहीं। डिंडौरी तक ऐसा ही उजाड़ रहेगा। इसलिए बड़े सबेरे चल देते और नौ-दस बजे तक जो गाँव आ जाता, वहीं ठहर जाते।

अगला पड़ाव बंजरटोला। इसके बाद सिवनीसंगम। यहाँ सिवनी नदी नर्मदा में आ मिली है। संगम पर बने मंदिर में रहने की बढ़िया व्यवस्था हो गयी और यहाँ का एकांत भी मन को छू गया, तो यहाँ चार दिन रह गये। शादियों के दिन थे। मंदिर में सामने की पगडंडी से बारातें निकलती रहती थीं।

अद्भुत आकर्षण है माँ नर्मदा में।

वैसाखी पूर्णिमा के दिन खूब बारातें देखने को मिलीं। शहनाई, निशान, नगाड़े, टिमकी और झुमका के स्वर दिन भर गूँजते रहे। दूल्हा-दुलहन हाथ में पंखा लिये घोड़े पर सवार रहते। एक काँवर में दहेज रहता। पगडंडी पर चलते एक के पीछे एक दस-पंद्रह बाराती रहते। बस हो गयी बारात !

तोताराम पास के गोरखपुर बाजार में मनिहारी का सामान बेचता है। रोज नर्मदा नहाने आता है। साथ में रहता है उसका तोता- पिंजड़े में नहीं, उसके कंधे पर, लेकिन उड़ नहीं पाता। तोते से बड़ा प्यार है उसे। अकेला जीव, न घर न घाट। न कोई आगे, न पीछे। थोड़े-बहुत पैसे इकट्ठे होते ही तीरथ करने निकल पड़ता है। एक दिन मैंने पूछा, 'तोताराम, तुमने शादी नहीं की ?'

'सगाई तो तीन बार हुई, लेकिन शादी एक बार भी नहीं हुई। किसी न किसी कारण से सगाई टूट जाती है।'

तीन-तीन सगाई के बावजूद कुँवारे तोताराम की व्यथा-कथा सुनकर मन उदास हो गया। लेकिन उसने अपने मन को मना लिया है। तोते में मन लगाया है।

एक दिन गोरखपुर का बाजार कर आये, फिर चल दिये। गरमी के दिन थे, खेतों में फसल नहीं थी। पहाड़ नहीं, जंगल नहीं। जंगल तो दूर, छाया के लिए एक पेड़ नहीं। सामने का गाँव दूर से ही दिखता रहता। रास्ता भटक जाने का कोई भय नहीं। सो पगडंडी की परवाह किये बिना नर्मदा के किनारे-किनारे ही चलते।

धूप के कारण बुरा हाल था, पर आज आकाश में बादल थे। पथरकुचा तक पहुँचते-पहुँचते आकाश बादलों से घिर गया। यहाँ नदी के पाट में बहुत-सी चट्टाने थीं। वरना यहाँ तक नदी केवल मिट्टी में होकर बहती है। कपड़े धोने तक के लिए पत्थर नहीं था। दोपहर का भोजन हमने नदी के पथरीले पाट में बनाया। भोजन करके चले ही थे कि तेज वर्षा के कारण भागकर गाँव में शरण लेनी पड़ी। थोड़ी देर की वर्षा में गाँव में इतना कीचड़ हो गया कि चलना मुश्किल हो गया। इसलिए रात वहीं रह गये।

पौ फटते ही कुछ दूर चलने पर लिखनी गाँव में एक वृद्धा से पीने के लिए पानी माँगा तो उसने कहा, 'आओ बेटा, पानी देती हूँ। लेकिन ऐसा करो, रोटी खाकर पानी पीओ। धूप में से आ रहे हो। खाकर पानी पीओगे तो ठीक रहेगा।'

माँ जैसे बच्चे को फुसलाती है, दुलराती है, बिलकुल वही भाव। उसके नेह को टाल नहीं सके। वह रोटियाँ ले आयी, उन पर शक्कर रखी थी। 'लो, खा लो बेटा।'

कैसा तृप्ति का भाव था उसके चेहरे पर !

अगला पड़ाव मझियाखार, फिर गोमतीसंगम। फिर लछमनमड़वा। लछमनमड़वा में एक साध्वी रहती है। मैंने उनसे कहा कि नौकरी के कारण पूरी परिक्रमा एक साथ नहीं कर सकता, छुट्टियों मंे थोड़ी-थोड़ी करके करता हूँ, तो उन्होंने कहा, 'बेटा, बूँदी का लड्डू पूरा खाओ तो मीठा लगता है और चूरा खाओ तो मीठा लगता है। इसका दुःख न करना।

दोपहर को डिंडौरी पहुँचे। डिंडौरी बड़ा कस्बा है। यहाँ नर्मदा पार करने वाले ग्रामीणों का क्रम अबाध गति से चलता रहता है। सिर पर गठरी या कंधे पर काँवर लिये पुरुष तथा सिर पर लकड़ी का गट्ठर और पीठ पर बच्चे को बाँधे स्त्रियाँ। पहले 'नर्मदा मैया की जय !' बोलकर प्रणाम करतीं, फिर नदी में उतरतीं। फिसलन और तेज प्रवाह के कारण बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती है। मुख्य धारा आने पर सभी चैकस और चैकन्ने हो जाते हैं, सधे हुए पाँवों से या एक-दूसरे की बाँह पकड़ कर धीरे-धीरे बढ़ते हैं। कैसा रोमांच है इसमें !

यह दृश्य मुझे मगन रखता है। तीन दिन तक यही देखते रहे, फिर आ गये। अमरकंटक से डिंडौरी तक की यह यात्रा सबसे कठिन होनी चाहिए थी, लेकिन यही सबसे आसान थी। आधे दिन का पहाड़, एक दिन का जंगल, फिर कुछ दिनों का सँकरा मैदान। नर्मदा जैसी असामान्य नदी भला सामान्य नियम को क्यों कर मानने चली।

-अमृतलाल बेगड़

इस यात्रावृत्तांत के लेखक श्री अमृतलाल बेगड़ का जन्म 03 अक्टूबर 1928 को जबलपुर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। नर्मदा नदी के प्रति विशेष लगाव के कारण वे नर्मदा तट की 1800 किलोमीटर से अधिक की कठिन पदयात्रा कर चुके हैं। लेखन के साथ कला में भी रुचि रखने वाले श्री बेगड़ के नर्मदा-परिक्रमा पर आधारित अनेक चित्र विभिन्न प्रदर्शनियों में आमंत्रित एवं पुरस्कृत हो चुके हैं। इन्हें वर्ष 2004 में साहित्य अकादमी पुस्कार से सम्मानित किया गया है।

शब्दार्थ

परकम्मावासी = प्रति वर्ष नर्मदा नदी की परिक्रमा करने वाले लोग। तन्वंगी = दुबले-पतले शरीर वाली। वनाच्छादित = चारांे तरफ वन से घिरा हुआ। दस्सी-दस्सी = दस-दस पैसा। लहुरा = छोटा। श्रीहीन = शोभा रहित।

प्रश्न-अभ्यास

विचार और कल्पना

1. नर्मदा नदी का उद्गम स्थान अमरकंटक है। हिमालय पर्वत से हमारे देश की अनेक नदियाँ निकलती हैं। नीचे दी गयी नदियों के नाम से उनके उद्गम स्थल का मिलान कीजिए -

नदियाँ	उद्गम स्थल
गंगा	यमुनोत्री
यमुना	गंगोत्री
सतलज	शेषनाथ झील
झेलम	राकस ताल

2. यदि लेखक की तरह आपको किसी लम्बी पैदल यात्रा पर जाना पड़े तो सूची बनाइए कि आप अपने साथ क्या-क्या सामान ले जायेंगे।

कुछ करने को

1. जहाँ दो या दो से अधिक नदियाँ मिलती हैं, उस स्थान को संगम कहते हैं। हमारे देश में कई संगम स्थल हैं। निम्नांकित शीर्षकों के अन्तर्गत कुछ संगम स्थलों का विवरण तैयार करें। क्रमांक संगमस्थल का नाम नदियों का नाम जो मिलती हैं।

जैसे - सिवनीसंगम नर्मदा-सिवनी

2. यात्रा देश के अंदर भी की जाती है और विदेशों की भी। विदेश की यात्रा के समय कुछ प्रपत्रों की भी आवश्यकता पड़ती है जैसे- 'पासपोर्ट' और 'वीज़ा'। इनके बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।

इस यात्रावृत्तांत के लेखक श्री अमृतलाल बेगड़ का जन्म 03 अक्टूबर 1928 को जबलपुर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। नर्मदा नदी के प्रति विशेष लगाव के कारण वे नर्मदा तट की 1800 किलोमीटर से अधिक की कठिन पदयात्रा कर चुके हैं। लेखन के साथ कला में भी रुचि रखने वाले श्री बेगड़ के नर्मदा-परिक्रमा पर आधारित अनेक चित्र विभिन्न प्रदर्शनियों में आमंत्रित एवं पुरस्कृत हो चुके हैं। इन्हें वर्ष 2004 में साहित्य अकादमी पुस्कार से सम्मानित किया गया है।

3. आपके घर के आसपास भी कोई न कोई नदी होगी। पता कीजिए-उसका उद्गम स्थल कहाँ से है और वह कहाँ तक जाती है।

4. हमारी नदियाँ हमारे ही द्वारा निरंतर प्रदूषित की जा रही हैं जिससे इनके अस्तित्व पर संकट पैदा हो गया है। कक्षा मंे शिक्षक की मदद से चर्चा कीजिए कि-

-नदियाँ किन-किन कारणांे से प्रदूषित हो रही हैं ?

- आप इनके बचाव के लिए क्या-क्या कर सकते हैं ?

5. अपने द्वारा की गयी किसी यात्रा का विस्तार से वर्णन कीजिए।

पाठ से

1. नर्मदाकंुड से आगे की यात्रा को लेखक ने नया अध्याय क्यों कहा है ?

2. लेखक ने विवाह और उससे सम्बन्धित जिन घटनाओं का वर्णन किया है, उसे लिखिए ?

3. लिखनी गाँव में पहुँचने पर लेखक न चाहने पर भी रोटी क्यों खा लेता है ?

4. ‘‘बेटा, बूँदी का लड्डू पूरा खाओ तो मीठा लगता है और चूरा खाओ तो मीठा लगता है।’’ साध्वी ने ऐसा क्यों कहा ?

5. यात्रावृत्त में आये सभी गाँवों व स्थानों की सूची बनाइए।

भाषा की बात

1. ‘नवजात शिशु की तरह नदी यहाँ धवल, उज्ज्वल और कोमल होती है।’ इस पंक्ति में नर्मदा नदी की तुलना नवजात शिशु से की गयी है। इस प्रकार के अन्य वाक्य पाठ से चुनकर लिखिए।

2. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

गंगा, नदी, पर्वत, बेटी,

3. ‘गिरते-पड़ते, चढ़ते-उतरते, चप्पा-चप्पा आगे बढ़ रहे थे।’ इस वाक्य में तीन प्रकार के

शब्द-युग्मों का प्रयोग हुआ है। नीचे लिखे शब्द-युग्मों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

इक्का-दुक्का, दस्सी-दस्सी, हरे-भरे, आमने-सामने,

4. अद्भुत आकर्षण में 'अद्भुत' शब्द 'विशेषण' हैं। पाठ में आये पाँच विशेषण और विशेष्य शब्द छाँटकर लिखिए।